# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

## तृतीय वर्ष - अभ्यास - ५

अक्टुबर - २०२५

गुणांक - १००

## प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

**प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -** २०

१. दिशाव्रत का प्रमाण करने के बाद भूला बैठे तो वह ..... कहलाता है।
२. जीव कर्मानुसार.....में उत्पन्न होता है।
३. वीतराग की पूजा करते वक्त ..... मुखकोश का उपयोग करना चाहिये।
४. अनंत काल तक अनंत..... करते हुए असह्य अनंत दुःखो को भोगने वाला हुआ है।
५. ..... कषाय के उदय में मरे तो देवगति में जाय।
६. शरदऋतु के नये पूर्ण चंद्र जैसे मुखवाले..... भगवान है।
७. ..... मानव को असंतोषी बनाता है।
८. जिनपूजा करते वक्त शुद्धि और..... अपनाये रखना अत्यंत आवश्यक है।
९. ..... के पश्चात कोई शिष्य परम्परा चली नहीं है।
१०. मोक्ष नहीं मिले तब तक अष्टमहासिद्धी पाने..... पूजा करनी चाहिये।
११. कंचनगिरि ..... वर्णी है।
१२. ..... पत्थर के खंभे जैसा है।
१३. अनंतानुबंधी कषाय..... पाने नही देता।
१४. ..... विद्या का धाम माना जाता था।
१५. परमात्मा की द्रव्य पूजा करते वक्त परमात्मा के प्रति..... बहुमान भाव रखना चाहिये।
१६. ..... एक विद्वान अध्यापक के रुप में प्रसिद्ध हुए।
१७. अरिहंत की ..... पूजा करने से अज्ञानरूपी अंधकार का नाश होता है।
१८. ..... पर्वत आमने सामने हैं।
१९. रति नोकषाय चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से ..... प्राप्त होती है।
२०. श्री सुधर्मास्वामी की शिष्य परम्परा श्री..... सूरि तक चलेगी।

**प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -** १५

१. सबसे बडा समुद्र कौनसा ?
२. अयोग्य फल, फूल या नैवेद्य भगवान को चढाये तो कौनसा कर्म बंधता है ?
३. उत्तरकुरु और देवकुरु क्षेत्र कहां पर आते है ?
४. ग्यारह गणधरो में सबसे ज्यादा आयुष्य किसकी थी ?
५. विरति उदय में नहीं आये, वह कौनसा कषाय ?
६. हरिवर्ष क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र के बीच में कौनसा पर्वत आया हुआ है ?
७. संज्वलन मान किसके जैसा है ?
८. परमात्मा की धूपपूजा करने से क्या लाभ मिलता है ?
९. श्रीव्यक्तस्वामी का गोत्र कौनसा था ?
१०. चांदी के पाट जैसी श्रेष्ठ-श्वेत की उपमा कौनसे भगवान की दंतपंक्ति को दी गयी है।
११. संज्वलन लोभ का रंग किसके जैसा होता है ?
१२. वृत वैताढ्य पर्वतो का आकार किसके जैसा है ?
१३. कषायो को उत्पन्न करने वाले को क्या कहा जाता है ?
१४. प्रथम गुणव्रत कौनसा ?
१५. चित्र और विचित्र पर्वत महाविदेह में कहां आये है ?

**प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -** १०

१) पच्चक्खाण २) धर ३) अह ४) सूरकरा ५) कसाय ६) आय ७) निअगोअं ८) पशुत्वम ९) सया १०) वरिस ११) मिढं १२) बहुमाणी १३) मुत्ति १४) तदुभयं १५) निरय १६) क्कमण १७) दीवमणुणो १८) उचिट्ठं १९) जस्सुदया २०) समाहिं

**प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -** १०

| A | B | A | B |
|---|---|---|---|
| १) नारियल द्वीप | १) नपुंसक वेद | ६) इन्द्रजाल | ६) दिशा परिमाण |
| २) रुप्यमय | २) शठता | ७) नगर की दाह | ७) लोभ |
| ३) सेतुबंध | ३) रुप | ८) भय | ८) मिश्रमोहनीय कर्म |
| ४) गोमूत्रिका | ४) रुक्मि पर्वत | ९) बकरी की लेंडी | ९) प्रत्याख्यानी माया |
| ५) मूर्च्छा | ५) नोकषाय | १०) माया | १०) स्त्रीवेद |

**प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -** १०

१. कषाय के कितने भेद है ?
२. दिक्परिमाण में कितने अतिचार आते है ?
३. मेरुपर्वत कितने योजन बाहर है ?
४. चारो प्रत्याख्यानी कषाय उत्कृष्ट से कितने समय तक रहते है ।
५. जंबूद्वीप में वक्षस्कार पर्वत कितने ?
६. श्रीव्यक्तस्वामी का छद्मस्थ काल कितना था ?
७. क्रोध के प्रकार कितने है ?
८. महाविदेह क्षेत्र की पश्चिम दिशा में कितनी विजये है ?
९. चारित्र मोहनीय कर्म के कितने भेद है ?
१०. पांडुकवन में कितनी महाशीलाये आयी हुई है ?

**प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही ( ✓ ) हैं या गलत (×) बताओ -** १०

१. सौमनस पर्वत लालवर्ण का है ।
२. अनंतानुबंधी क्रोध तीव्र है ।
३. जिस मनुष्य को विष्टा सहित जलाने में आये, वो मनुष्य सियार होता है ।
४. यमक-समक पर्वत देवकुरु में आते है ।
५. पुरुषवेद तृण के अग्नि समान है ।
६. हिरण्यवंत क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत वैताढ्य का नाम गंधापाती है ।
७. लोभ आत्मा को रंजित करता है ।
८. कंचनगिरि पर्वत देवकुरु एवं उत्तरकुरु क्षेत्र में आये हुए है ।
९. प्रभुजी की फलपूजा द्वारा साधक मोक्षफल को प्राप्त करता है ।
१०. हिरण्यवंत और एरावत क्षेत्र के बीचोबीच महाहिमवंत पर्वत है ।

**प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -** १०

१. मान में अकडता है ।
२. मृत्यु के बाद जन्म भले बदलता है, पर गति नहीं बदलती ।
३. हे स्वामीन ! किस कर्म से मैं चांडालकुल में उत्पन्न हुआ ।
४. यह क्रोध शांत होने में ज्यादा समय लगता है ।
५. स्वप्न समान यह संसार है ।
६. पुण्यानुबंधी पुण्य का यह अद्भुत साधन है ।
७. मिश्र मोहनीय कर्म के उदय से जिनधर्म के प्रति समभाव होता है ।
८. मैं परदेश नहीं जाऊगां ।
९. लोभ वाला जीव मरता है पर लोभ को नहीं छोडता है ।
१०. गोबर में से भी बिच्छू की उत्पति नजर आती है ।

**प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -** १५

१. मान के कितने प्रकार है ? उसमे से संज्वलन व अनंतानुबंधी मान समझाइये ।
२. श्री अजितनाथ भगवान के गुण एवं गरिमा । ३) श्री सुधर्मास्वामी की शंका और वीरप्रभु द्वारा किया गया समाधान ।
४. वर्षधर पर्वत । ५) क्षेत्रवृद्धि अतिचार तथा स्मृति अंतर्धान अतिचार समझाइये ।

**उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :**
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com